शिक्षक की प्रभावशीलता
अवधारणा एवं रूपरेखा

केवलानंद काण्डपाल*

शिक्षा की गुणवत्ता के लिए शिक्षक का प्रभावकारी होना बहुत ज़रूरी है। शिक्षक की प्रभावशीलता न केवल शिक्षा की गुणवत्ता के लिए ज़रूरी है, वरन् शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी इसकी अहम भूमिका है। इसका श्रेय शिक्षक को मिलना ही चाहिए। वस्तुतः शिक्षक का बहु-प्रशंसित होना और प्रभावकारी होना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता के आलोक में निर्मित जन-छवि, शिक्षक को इस बात के लिए प्रेरित करती है कि वह अपने प्रभावकारी शिक्षण-अधिगम प्रयासों को जारी रखे और इसे निरंतर बेहतर करने की दिशा में प्रयास करे। इस विषय पर विभिन्न शिक्षकों, अभिभावकों, समुदाय के लोगों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं बच्चों से बातचीत के अनुभवों के आलोक में इस लेख में शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने-समझने का प्रयास किया गया है। बातचीत के साथ-साथ,अवलोकन तथा अनुभव के आधार पर शिक्षक की प्रभावशीलता से संबंधित घटकों/कारकों तथा कब हम कह सकते हैं कि शिक्षण प्रभावकारी रहा? को पहचानने की कोशिश की गई है। साथ ही वे कौन से घटक/कारक हैं जो प्रभावकारी शिक्षण के लिए बहुत ज़रूरी हैं, उन्हें इस लेख में उल्लिखित करने का प्रयास किया गया है तथा इसके लिए एक उपयुक्त रूपरेखा सुझाई गई है।

शिक्षण कार्य एक गहन ज़िम्मेदारी का काम है। अन्य पेशों, जैसे— डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि की तुलना में शिक्षक का पेशा कुछ जटिल भी है। मेरे इस विश्वास के पीछे कुछ पुख्ता कारण हैं। अन्य पेशों में पेशेवरों के पास आने वाले 'क्लाइंट' (जिसे समझने के लिए हम यहाँ उपभोक्ता भी कह सकते हैं।) को कमोबेश यह स्पष्ट तो होता ही है कि उनकी समस्या क्या है? उनकी आवश्यकताएँ क्या हैं? उन्हें किस प्रकार की मदद की ज़रूरत है? जिसके आधार पर पेशेवर गुणवत्ता युक्त सेवा उपलब्ध करने के लिए उपयुक्त रणनीति एवं प्रक्रियाएँ निर्धारित कर सकता है। एक डॉक्टर के पास आने वाले मरीज़ को सामान्यतः यह ज्ञात होता है कि उसकी समस्या क्या है? और उसे यह भी पता है कि वह चाहता क्या है? मसलन वह स्वस्थ होना चाहता है। इसी प्रकार अन्य पेशों के संबंध में विचार करें तो हम देखते हैं कि उपभोक्ता को अपनी समस्या एवं आवश्यकता का कुछ-न-कुछ संज्ञान तो है तथा वह क्या चाहता है, इसकी अस्पष्ट ही सही कुछ-न-कुछ रूपरेखा उसके मस्तिष्क में ज़रूर होती है। एक शिक्षक इस मामले में अन्य पेशेवरों की तुलना

**प्रधानाध्यापक*, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पुड्कुनी (कपकोट), जनपद-बागेश्वर, उत्तराखंड–263642

में चुनौतीपूर्ण स्थिति में होता है। यह चुनौतियाँ एक से अधिक होती हैं। प्रथम, एक शिक्षक के पास जो बच्चा आता है, उसे ठीक-ठीक यह मालूम नहीं होता कि उसकी समस्याएँ, चुनौतियाँ एवं आवश्यकताएँ क्या-क्या हैं? दूसरा, वह यह बताने की स्थिति में भी नहीं होता कि उसको किस प्रकार की सहायता की ज़रूरत है? तीसरा, वह किस दिशा में आगे बढ़ना चाहता है? यह रूपरेखा भी उस बच्चे को स्पष्ट नहीं होती। वह व्यक्ति ही वास्तव में शिक्षक है जो यह विश्वास करता है की उसे शिक्षक ही होना चाहिए, इसके अलावा वह कुछ और नहीं हो सकता।

औचित्य

सामान्यतः आमजन इस बात को स्वीकार करने लगे हैं कि शिक्षण कार्य भी एक पेशा है, किसी अन्य पेशे की तरह इसकी सफलता का आकलन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि इसकी प्रभावशीलता किस प्रकार की है? इस प्रभावशीलता के दायरे में शैक्षिक गुणवत्ता, विद्यार्थी के लिए सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) और शैक्षिक उद्देश्यों की संप्राप्ति, तीनों ही आ जाते हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता इस आधार पर निर्धारित होती है कि शिक्षक ने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक बच्चे की अधिगम संबंधी ज़रूरतों को संबोधित करने के लिए क्या किया? और इससे बच्चे की अधिगम ज़रूरतें किस प्रकार से पूरी हो पाईं? अब शिक्षाविद् इस बात पर एक मत हैं कि कक्षा के प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, तरीका, रुचियाँ अलग-अलग हैं। ऐसे में प्रत्येक बच्चे को सिखाने के लिए शिक्षण का एक ही तरीका कारगर नहीं हो सकता। इसे प्रभावकारी बनाने के लिए शिक्षण प्रक्रिया के साथ-साथ सीखने वाले बच्चे के दृष्टिकोण का ज्ञान होना भी आवश्यक है। बच्चे के लिए इस 'सीखने' के क्या मायने हैं? क्या प्रतिफल हैं? गुणवत्ता क्या है? आदि की जानकारी होना भी आवश्यक है। यदि बच्चे के द्वारा जो कुछ भी सीखा गया है और वह उन कसौटियों पर खरा नहीं उतरता है तो संभव है इसके कई कारण हो सकते हैं, पर इतना निश्चित है कि इनमें से एक प्रमुख कारण 'शिक्षण की प्रभावशीलता' में कमी है। अकीरी और उग्बोरूग्बो (2009) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि, 'यदि शिक्षक प्रभावी है तो इससे विद्यार्थियों का अकादमिक प्रदर्शन अच्छा होगा।'

लेखक द्वारा एक सेमिनार में सहभागिता की गई थी जिसके शीर्षक/थीम ने लेखक को उद्वेलित किया कि मुख्य थीम एवं उसके उपविषयों (कक्षा-कक्ष प्रबंधन और नेतृत्वशीलता, मूल्यांकन और आकलन, सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग, नवाचारी अभ्यास, पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों पर आधारित नवाचार, समावेशी शिक्षण से संबंधित नवाचार आदि) का संबंध एवं परिणाम तो शिक्षक की प्रभावशीलता से है। अतः सेमिनार की थीम एवं इसके उपविषयों के आलोक में शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने-समझने का प्रयास किया जाए। शिक्षक की प्रभावशीलता की अवधारणा की स्पष्टता का लाभ यह होगा कि शिक्षक जो कुछ भी नवाचारी प्रयास करते हैं, शिक्षण प्रक्रियाओं में जो कुछ भी बदलाव लाते हैं, उसकी प्रभावशीलता के आलोक में जाँच-परख कर सकें। शिक्षक की प्रभावशीलता को

जाँचने-परखने के लिए एक सुस्पष्ट रूपरेखा उपलब्ध होनी चाहिए। इसी चिंतन के आधार पर लेखक द्वारा यह लेख लिखा गया है।

यह अवधारणात्मक लेख है, जिसमें शिक्षक की प्रभावशीलता की अवधारणा के संबंध में विचार किया गया है। अतः इस लेख का मुख्य उद्देश्य निम्न प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है—

- शिक्षक की प्रभावशीलता की अवधारणा को परिभाषित करना।
- शिक्षक की प्रभावशीलता का आकलन करना।
- शिक्षक की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए उपयुक्त रूपरेखा तैयार करना।

इस लेख हेतु अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक अध्ययन पद्धति का चयन किया गया। इस लेख में शिक्षक की प्रभावशीलता की अवधारणा एवं इसके लिए उपयुक्त रूपरेखा पर विचार किया गया है।

शिक्षक की प्रभावशीलता

प्रभावशीलता के संदर्भ में शिक्षण कार्य अधिगमकर्ता की सहभागिता और अन्य घटकों के साथ-साथ इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक/शिक्षिका का प्रयास कितना प्रभावकारी है? शिक्षक की जन-छवि एवं आत्म-छवि का मूलभूत आधार शिक्षक की प्रभावशीलता होना चाहिए और इस प्रभावशीलता के बारे में सबसे उपयुक्त राय शिक्षक (स्वयं), विद्यालय प्रमुख, साथी शिक्षकों एवं अधिगमकर्ता की हो सकती है। हम अपने पढ़ने-लिखने के दिनों को याद करें तो स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि, 'अमुक शिक्षक क्या गज़ब पढ़ाते थे, उनकी कक्षा में सिखाई गई चीज़ें मेरे लिए बहुत काम की थीं, उस विषय विशेष को और अधिक गहराई से जानने-समझने की रुचि उत्पन्न हुई। आगे की कक्षाओं में उस विषय को पढ़ने में मुझे बहुत मदद मिली।' इसी प्रकार जब हम शिक्षक के रूप में अपने शिक्षण पर चिंतन (रिफ़्लेक्शन) करते हैं, तो हम महसूस करते हैं कि आज कक्षा में बच्चों की सहभागिता कैसी रही? बच्चे ने अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की या नहीं, कक्षा में मेरा अकेलापन था या बच्चों की सक्रियता थी, बच्चों के चेहरे पर सीखने का आनंद था या नहीं, आज कक्षा के अनुभवों से मैं संतुष्ट हूँ या नहीं हूँ, मेरा आज का प्रयास, बच्चों को पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने में कितना मददगार साबित होगा? इससे शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने में हमें कुछ मदद मिल सकती है।

व्याख्या

यदि शिक्षक के शिक्षण-अधिगम प्रयासों से अधिगमकर्ता को विषयों में निर्धारित अधिगम स्तर की संप्राप्ति होने के साथ शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों की संप्राप्ति भी होती है, तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षक का शिक्षण प्रभावी रहा। इसके लिए शिक्षक द्वारा नवाचारी प्रयास, आई.सी.टी. का उपयोग, समावेशी कक्षा-कक्ष जैसे प्रयास किए जाते हैं।

शिक्षक की प्रभावशीलता का आकलन

महान भारतीय मनीषी एवं दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की केंद्रियता एवं प्रभावशीलता के बारे में कही गई

बात इस परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है कि, ''अन्य संसाधनों की कमी को एक अच्छा शिक्षक पूरा कर सकता है परन्तु एक अच्छे शिक्षक की कमी को अन्य सभी संसाधन मिलकर भी पूरा नहीं कर सकते हैं।'' शिक्षक की प्रभावशीलता, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक ऐसा साझा अनुभव है, जो अधिगमकर्ता एवं शिक्षक द्वारा सामूहिक रूप से अनुभूत किया जा सकता है। वस्तुतः यह रोज़मर्रा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का गुणात्मक आकलन है, जिसको आँकड़ों में बाँधना एक तरह से मुश्किल काम है। शिक्षा की गुणवत्ता के आयामों के बारे में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* बहुत स्पष्टता के साथ उल्लेख करती है कि, 'जब व्यवस्था प्रत्येक बच्चे तक पहुँचने का प्रयास करती है तो गुणवत्ता का मुद्दा एक नयी तरह की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। यह मान्यता कि गुणवत्ता सुविधा का अनुसरण करती है, सहभागिता पर आधारित उस दर्शन से असंगत बैठती है जिसका व्यवहार भारत राजनीतिक क्षेत्र में करता है...बच्चों के लिए जानकारी व हुनर के सन्दर्भ में परिकल्पित अनुभवों के दृष्टिकोण से भी गुणवत्ता के आयाम को परखना आवश्यक है।'

शिक्षक की प्रभावशीलता के आकलन हेतु रूपरेखा

सामान्यतः किसी विद्यालय की प्रभावशीलता का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि अमुक विद्यालय से पढ़े छात्र कहाँ-कहाँ चयनित हो रहे हैं? किन-किन पदों पर कार्यरत हैं? समाज में किस प्रकार की भूमिका में हैं? इससे विद्यालय के प्रभावकारी होने का एक अनुमान तो मिलता है, परंतु ऐसा भी हो सकता है कि उस विद्यालय के सभी शिक्षक प्रभावकारी न हों, कुछ शिक्षकों का शिक्षण प्रभावकारी हो तथा कुछ का शिक्षण औसत या उससे भी कम हो। ऐसे में यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि उन घटकों/कारको को चिह्नित करने का प्रयास किया जाए, जिनसे यह ज्ञात हो कि अमुक शिक्षक का शिक्षण प्रभावकारी है अथवा नहीं। प्रभावकारी शिक्षण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है, अतः हमें इसके घटकों/कारकों को इसी में तलाशना होगा। शिक्षक की प्रभावशीलता के आकलन हेतु एक रूपरेखा की ज़रूरत है। इससे हमें शिक्षक के शिक्षण कार्य की प्रभावशीलता को जानने-समझने में मदद मिलेगी। यह रूपरेखा इसलिए भी ज़रूरी है कि वर्तमान में विद्यार्थियों की अधिगम संप्राप्ति के आकलन के लिए किए जाने वाले प्रयासों से विद्यार्थियों की अधिगम स्थिति की जानकारी तो हो जाती है, परंतु इससे पूर्णतः ज्ञात नहीं होता कि इस परिणाम के पीछे शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का क्या योगदान रहा। इसलिए शिक्षण प्रभावशीलता के लिए एक सुस्पष्ट रूपरेखा की आवश्यकता है। इस रूपरेखा के निरूपण से पूर्व उन घटकों पर स्पष्टता होनी ज़रूरी है, जिनके आलोक में शिक्षक की प्रभावशीलता को जाँचा-परखा जाना है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की प्रभावशीलता का अनुमान निम्न घटकों/कारकों के आलोक में करने की आवश्यकता होगी—

- **शिक्षा के लक्ष्य एवं विषय के उद्देश्यों की स्पष्टता**— शिक्षण के प्रभावकारी होने की पहली कसौटी यह है कि शिक्षक को शिक्षा

के लक्ष्य की स्पष्टता हो। 'शिक्षा के लक्ष्यों में व्यापक दिशानिर्देश हैं जो शैक्षणिक प्रक्रियाओं के तय किए गए आदेशों और स्वीकृत सिद्धांतों से संगति बिठाने में मदद करते हैं' (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*)। शिक्षक के लिए विषय के उद्देश्यों की स्पष्टता बहुत ज़रूरी है। प्रत्येक विषय के उद्देश्य शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की संगति में होते हैं। शिक्षक को किसी भी विषय की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में हमेशा सजग रहने की ज़रूरत होती है ताकि इस दौरान ऐसा कोई भी कृत्य घटित ना हो जाए जो शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों से असंगत दिशा में हो। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा का सामान्य लक्ष्य बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्यों का बीजारोपण करना है। अतः किसी भी विषय की पाठ्यचर्या एवं शिक्षण प्रक्रिया में लोकतंत्र हेतु उपयुक्त मूल्य, जैसे— स्वतंत्रता, समानता, न्याय, व्यक्ति की गरिमा, अखंडता आदि की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का सामान्य लक्ष्य किशोरों में समाज के उपयोगी नागरिक की भूमिका के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों का बीजारोपण करना है, जो लोकतंत्र हेतु उपयुक्त मूल्यों की संगति में हो। इसलिए इस स्तर पर शिक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता किशोर को अपनी रुचि एवं सामर्थ्य के विषय क्षेत्र में आगे बढ़ने के क्रम में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संचालित की जानी चाहिए। विद्यालयी पाठ्यचर्या में कोई विषय एवं गतिविधि क्यों संचालित की जा रही है, इसका तार्किक आधार शिक्षक को स्पष्ट होना चाहिए और इस बात का भी शिक्षक को हमेशा भान रहना चाहिए की उसका शिक्षण कृत्य विषय शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में और शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति के क्रम में है। प्रारंभिक कक्षाओं में अध्यापक को इस मामले में अतिरिक्त सजगता की ज़रूरत होगी।

- **विषय ज्ञान**— शिक्षक, कक्षा में जिस भी विषय को लेकर बच्चों के साथ काम करता है, उस विषय की प्रकृति, विकास-क्रम एवं अद्यतन प्रगति के बारे में सम्यक जानकारी और स्पष्टता उसे होनी आवश्यक है। प्रायः हम अपने व्यावहारिक अनुभवों से जानते हैं कि किसी विषय में बच्चों की अभिरुचि बढ़ जाती है, उस विषय विशेष की कक्षा के लिए विद्यार्थी उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं तथा कुछ मामलों में इसके विपरीत भी देखने-सुनने में आता है। विषय विशेषज्ञ होना एक बात है, अपने विषय ज्ञान को कक्षा की प्रक्रिया में इस प्रकार से बुन लेना कि इससे अधिगमकर्ता शिक्षक की विद्वत्ता पर निर्भर न हो और विद्यार्थी अपने ज्ञान का सृजन स्वयं कर सकें (प्रारंभिक स्तर से माध्यमिक स्तर पर सीख रहे बच्चों के संदर्भ में तो यह बहुत ज़रूरी है।)। शिक्षक की अध्येतावृत्ति, प्रभावकारी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण आधार है। कहा भी गया है कि एक शिक्षक, दूसरों को तब तक नहीं सिखा सकता है जब तक कि वह स्वयं सीखने की प्रक्रिया में शामिल नहीं है। सीखने वाले को किसी विषय का रसास्वादन तभी कराया जा सकता है, जबकि सिखाने वाला उस विषय का रस-पान कराने का हुनर जानता हो। किसी विषय विशेष में पाठ्य-वस्तु के चयन एवं संयोजन में

यह बहुत उपयोगी है, जिसका प्रभाव शिक्षक की प्रभावशीलता पर और अंततः शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है।

- **बाल मनोविज्ञान एवं शिक्षणशास्त्र**— प्रभावकारी शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह अधिगमकर्ता के मनोविज्ञान को समझता हो। यहाँ पर शिक्षक से विशेषज्ञ मनोविज्ञानी होने की अपेक्षा बिलकुल नहीं है, परंतु उसे इस बात की जानकारी ज़रूर होनी चाहिए कि किसी विशेष उम्र में बच्चा/किशोर किस प्रकार का व्यवहार करता है? उसकी रुचियाँ/अभिरुचियाँ क्या हैं? उसके सीखने की गति/तरीका क्या है? वह किस बात से उत्साहित होता है? एक संवेदनशील (सेंसिटिव) शिक्षक के लिए यह जानना मुश्किल नहीं है। कक्षा-कक्ष की व्यावहारिक प्रक्रियाओं के अनुभव से, यह जानने-समझने का हुनर निरंतर समृद्ध होता रहता है।

  शिक्षणशास्त्र से हमें ज्ञात होता है कि किसी आयु विशेष के अधिगमकर्ता के सीखने-सिखाने का क्या विशेष तरीका हो सकता है? उम्र के विभिन्न स्तरों पर इसमें बदलाव करना क्यों ज़रूरी है? जो शिक्षण प्रणाली हम छह वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्रयोग करते हैं, वही शिक्षण प्रणाली 16 वर्ष के किशोर विद्यार्थी के लिए प्रयोग नहीं कर सकते। शिक्षणशास्त्र की जानकारी शिक्षक को इस मामले में मदद करती है कि किसी स्तर विशेष एवं विषय विशेष को कैसे पढ़ाया जाना चाहिए? मनोविज्ञान एवं शिक्षणशास्त्र की समझ से हमें यह मदद मिलती है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता को कैसे सिखाया जाए? कब जानकारी खोजने के अवसर देने हैं? कब और किस तरह से आकलन करना है? प्रत्येक अधिगमकर्ता अलग-अलग तरीके से एवं भिन्न गति से सीखता है। इस समझ को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समाहित करने से शिक्षण प्रभावकारी हो सकता है, इस प्रकार के अनुभव के मायने सीखने और सिखाने वाले, दोनों के लिए अर्थपूर्ण होंगे।

- **शैक्षिक तकनीकी का उपयोग**—सीखने और सिखाने की गुणवत्ता को बढ़ाने में तकनीकी अहम भूमिका निभा सकती है, बशर्ते कि हम इसकी मात्रा, समय, विविधता एवं प्रारूप का चयन करते समय अधिगमकर्ता की शैक्षिक ज़रूरतों का खयाल रखें। एक-सी तकनीकी प्रत्येक अधिगमकर्ता की ज़रूरतों को संबोधित नहीं कर सकती है, इसका संज्ञान तकनीकी चयन के संदर्भ में रखें। आज हम सभी इस बात पर सहमत हैं कि विभिन्न विषय अनुशासनों में सीखने-सिखाने के लिए बहुत-से तकनीकी विकल्प अपनाए जा रहे हैं। आज ज़रूरत इस बात की भी है कि कक्षा-कक्ष में मौजूद प्रत्येक अधिगमकर्ता की शैक्षिक ज़रूरतों को संबोधित किया जाए जिससे कक्षा समावेशी बन सके, जहाँ पर प्रत्येक सीखने वाले को अपनी रुचि एवं गति से सीखने के अवसर मिल सकें। सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रयोग से प्रत्येक अधिगमकर्ता के लिए अवसर सृजित किए जा सकते हैं। ऐसी कक्षा जहाँ प्रत्येक बच्चे के लिए सीखने

के समुचित अवसर उपलब्ध हों। आजकल तो लगभग सभी विषयों में प्रत्येक स्तर के अधिगमकर्ताओं के लिए प्रचुर अधिगम सामग्री उपलब्ध है। कई अवलोकनों में यह भी देखने में आया है कि बच्चे कंप्यूटर में कुछ करते दिखाई देते हैं, परंतु बच्चों से बात करने पर पता चलता है कि कुछ बच्चे किसी विषय विशेष को सीखने के बजाय किसी खेल को खेलने में व्यस्त हैं। इससे बच्चे कंप्यूटर परिचालन और कुछ तकनीकी बातें भले ही सीख रहे हों, परंतु जहाँ तक विषय को सीखने के अवसरों का प्रश्न है, अलाभकर स्थिति में ही कहे जाएँगे। यह न तो बच्चों को विषय सीखने के लिए प्रभावकारी है और न ही शिक्षक की प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करता है।

- **नवाचार**—किसी भी शिक्षक का शिक्षण प्रभावकारी तभी कहा जा सकता है, जब वह कक्षा के सभी अधिगमकर्ताओं को सीखने के अवसर उपलब्ध कराता हो, तभी हम इसे समावेशी कक्षा कह सकते हैं। जब शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों के आलोक में पाता है कि कुछ अधिगमकर्ताओं के लिए उसका शिक्षण उपयोगी साबित नहीं हो पा रहा है, यह चिंतन शिक्षक को नवाचार के लिए प्रेरित करता है। सामान्यतः नवाचार हम ऐसे प्रयासों को कहते हैं जिनमें कम-से-कम तीन तत्व ज़रूर हों। पहला, वह खोज या प्रयोग के लिहाज़ से एकदम नया हो; दूसरा, यह उपयोगी हो; तीसरा, यह किसी समस्या के समाधान के लिए हो और सोद्देश्य हो। इन आधारों पर शिक्षक द्वारा किया गया प्रयास नवाचार की श्रेणी में शामिल किया जाना चाहिए, भले ही यह छोटे स्तर पर ही किया गया हो। यह नवाचार सम्मान या प्रशंसा पाने की दृष्टि से न किया गया हो, वरन् इसको वास्तविक कक्षा-कक्ष की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अपनाया गया हो, इससे सीखने वाले को मदद मिली हो, विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मददगार हो और अंततः शिक्षा के लक्ष्यों तक पहुँचने में सहायक हो। यदि ऐसा संभव हो पाता है, तब ही हम कह सकते हैं की शिक्षण की प्रभावशीलता में नवाचार की भूमिका है।
- **संवेदनशीलता**— सार्वजानिक शिक्षा का एक अहम पहलू यह है कि इस प्रणाली में नामांकित अधिसंख्यक बच्चे विषम एवं अलाभकर परिस्थितियों से आते हैं, ऐसे बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने का खतरा हमेशा बना रहता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन बच्चों के साथ विशेष संवेदनशीलता बरतने की ज़रूरत है, उनकी भाषा-बोली, संस्कृति आदि को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में स्थान देने की ज़रूरत होती है। वैसे भी शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि कक्षा में मौजूद प्रत्येक अधिगमकर्ता के प्रति संवेदनशीलता बरतें। यह संवेदनशीलता इस लिहाज़ से भी ज़रूरी है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अनुकूल परिणाम न मिलने के बावजूद शिक्षक, अधिगमकर्ता में विश्वास बनाए रखें, इसके लिए सतत धैर्य की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा मूल्य है जो प्रत्येक अधिगमकर्ता में यह विश्वास पैदा कर सकता है कि वह भी अपनी गति एवं तरीके से सीख सकता है, कक्षा प्रक्रिया में उसकी सहभागिता बढ़ा सकता है। यह विश्वास शिक्षक की प्रभावशीलता का

महत्वपूर्ण संकेतक है, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि उपरोक्त अन्य घटकों में कुछ कमी के बावजूद संवेदनशीलता के कारण अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावकारी बनाए रख सकता है। इसके विपरीत उपरोक्त सभी बातों के होने के बावजूद संवेदनशीलता की कमी के कारण शिक्षण एक 'रूटीन' मात्र रह जाता है, प्रभावकारी नहीं हो पाता।

व्याख्या

उपरोक्त रूपरेखा के आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के द्वारा इस बात का आकलन किया जा सकता है कि शिक्षक के समस्त प्रयास शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में किस प्रकार से मददगार हैं। इसके लिए शिक्षक की कक्षा-कक्ष प्रक्रिया का अवलोकन किया जाना होगा तथा अवलोकन के आधार पर यह जानने-समझने में मदद मिल सकेगी कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया प्रभावी शिक्षण की ओर ले जा रही है या नहीं। यदि इसमें कोई विचलन है तो इसी स्तर पर इसका संज्ञान लेकर शिक्षक को फ़ीडबैक देने की ज़रूरत होगी। इस हेतु शिक्षकों को एन.सी.आर.टी. द्वारा विकसित निष्पादन सूचकों (PINDICS) का भली-भाँति उपयोग करना होगा। साथ ही शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को उद्देश्यपरक एवं सीखने-सिखाने के प्रयासों में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) को अनिवार्य रूप से क्रियान्वित करना होगा।

निष्कर्ष

अतः उपरोक्त विमर्श के आलोक में निष्कर्षस्वरूप हम कह सकते हैं कि किसी भी स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता अन्य बातों के अलावा इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया कितनी प्रभावी है? और इससे इस बात का अनुमान मिलता है कि शिक्षक की प्रभावशीलता का स्तर क्या है? शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में संलग्न दोनों ही पक्ष (शिक्षक एवं विद्यार्थी), तात्कालिक रूप में, इस प्रभावशीलता को अनुभूत कर सकते हैं। यहाँ इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि प्रभावकारी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लक्ष्य के लिए एक ज़रूरी आधार है। स्कूलों और उसमें भी कक्षा-कक्ष को एक ऐसे संदर्भ की तरह पोषित करने की ज़रूरत है, जिसमें बच्चे स्वयं को सुरक्षित, स्वीकृत एवं खुश महसूस करें, सीखने का आनंद उठा सकें और शिक्षक पेशेवर रूप से संतोष का अनुभव कर सकें तथा शिक्षण की सार्थकता को महसूस कर सकें। इस प्रकार विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के साझा अनुभवों को शिक्षण की प्रभावशीलता के संदर्भ में देखा जा सकता है।

संदर्भ

अकीरी, ए.ए. और एन.एम. उग्बोरूग्बो. 2009. टीचर्स इफ़ेक्टिवनेस एंड स्टूडेंट्स एकेडेमिक परफ़ॉर्मेंस इन पब्लिक सेकंडरी स्कूल्स इन डेल्टा स्टेट्स. *नाइजीरिया स्ट्राइटिस ऑन होम एंड कम्युनिटी साइंस*. 3 (2), पृ.107–113.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. पृ. 9–11. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.